अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

सौभाग्य सिंह शेखावत के हिंदी साहित्य का अध्ययन
सौभाग्य सिंह शेखावत की लोक दृष्टि

शोधार्थी :- नीलू कंवर शेखावत
हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज.)

शोध सार :- 'लोक' अपने आप में एक व्यापक शब्द है जिसकी व्याप्ति उस जनसाधारण में मिलती है, जिनके ज्ञान का आधार सिद्धांतों से अधिक व्यवहारगत है। यह आभिजात्य गर्व से कोसों दूर है। "साधारण जीवन - लोक जीवन - ग्राम्य जीवन बहुत कुछ पर्यायवाची है। लोक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्वाभाविकता है।"1
वस्तुतः प्रकृति का मूल कलेवर अकृत्रिम ही है। भौतिकता और स्पर्धा के स्थूल आवरण में से भी कभी-कभी मुक्त मन का सरल कंपन तरंगित होते हुए दिखाई दे जाता है। यह सरलता ही लोक है।

इस 'लोक' शब्द से ही हिंदी शब्द 'लोग' की व्युत्पत्ति मानी गई है जिसका तात्पर्य सर्व सामान्य जन से है।

'लोक' शब्द का अर्थ 'जन-पद' या 'ग्राम्य' नहीं है बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं। ये लोग नगर में परिष्कृत, रुचि-सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।"2

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

लोक की वास्तविक संस्कृति उसके कंठस्थ साहित्य में निहित होती है। अतः लोक शब्द की व्याख्या के अभाव में लोक साहित्य का ज्ञान सर्वदा अपूर्ण है। यह लोक शब्द अत्यंत प्राचीन है जिसका प्रयोग वैदिक काल से निरंतर रूप में होता चला आ रहा है।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में- "लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है। उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है। लोक कृत्स्न-ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिए 'लोक' सर्वोच्च प्रजापति है। लोक, लोक की धात्री सर्व भूत माता, पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नए जीवन का अध्यात्म शास्त्र है। इसका कल्याण हमारी मुक्ति का द्वार है और निर्माण का नवीन रूप है। लोग-पृथ्वी-मानव इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याणतम रूप है।"3

इस प्रकार स्पष्ट है कि लोक भू-भाग पर व्याप्त साधारण जन समाज है।

राजस्थानी लोक जीवन में सूक्ष्म गति रखने वाले श्री शेखावत के निबंध लोक संस्कृति के विभिन्न अंगों से संपृक्त ही नहीं अपितु वह उनकी रग-रग से परिचित भी है। चाहे लोक गीत हो, लोक वार्ता हो,लोक नृत्य हो या लोक उत्सव। उनकी ऐतिहासिक दृष्टि लोक जीवन के विभिन्न अंगों का सामाजिक, राजनैतिक व ऐतिहासिक संदर्भ खोजने में सदैव जिज्ञासु और प्रयत्नशील रहती है।

सामान्यतः लोक मान्यताओं की पृष्ठभूमि में कोई न कोई प्रसंग या संदर्भ होते ही हैं। कालांतर में उन बड़े संदर्भों का भौतिक रूप विस्मृत होता जाता है किंतु उनकी मान्यताएं लोक में (लोकोक्ति या लोकगीत अथवा लोकवर्ताओं के रूप में) जीवित रहती हैं। श्री शेखावत ने उन्हें खोज-खोजकर साहित्य का अंग बनाया और इसे जनसाधारण से परिचित करवाया।

बीज शब्द :- डिंगल, पांडुलिपी, संपादन, लोक साहित्य, पडूतर, दूहा, अभिव्यंजना, गेहर, अनुसंधिता, तमाच्छादित, उपयोगिता, परिशमन ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

मूल आलेख :- श्री सौभाग्य सिंह शेखावत का लेखन बहुआयामी रहा। उनका सृजन अनेकानेक पोथियों, ग्रंथों और पत्रिकाओं में समाहित है। प्रमुख रूप से उनके लेखन के तीन पक्ष है- एक मौलिक, दूसरा डिंगल साहित्य का संपादन व संरक्षण एवम् तीसरा लोक जीवन में तैरती लोक कथाओं, गीतों, कहावतों, पड़ूतरों का संकलन जो कभी साहित्य का पृष्ठ न बनकर भी जन-जन की जिह्वा पर आरूढ़ रहते हैं।

वैसे तो इतिहास और साहित्य दो पृथक विधाएं है किंतु राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में इसे पृथक कर पाना थोड़ा जटिल है क्योंकि यहां का साहित्य ऐतिहासिक संपुट से ही सुरक्षित व संवर्धित हो पाया है।

"साहित्य के लिये इतिहास बंधन है, यह सत्य है। कभी-कभी साहित्य इस बंधन से छटपटाता है, इस बंधन को तोड़कर आगे बढ़ना चाहता है, लेकिन जब वही साहित्य बंधन को तोड़कर विनाश की लाली फैलाने लगता है, तब सबकी इच्छा होती है कि नदी की बाढ़ उतर जाये। कई बार हमारे इतिहास में ऐसी घटनायें घटी हैं जब कि साहित्य कूलशालिनी सरिता बन गया है।" 4

उनके निबंध संग्रह राजस्थानी लोक साहित्य और संस्कृति के उन अमूल्य रत्नों को पाठकों के समक्ष अनावृत करते हैं, जिनका साहित्य के विकास में महत् योगदान है।

अपने निबंध 'राजस्थानी लोककथाएं' में लोक साहित्य का स्वरूप समझाते हुए वह कहते हैं -

"लोक साहित्य लोक मानस की अकथनीय विचार अभिव्यक्ति का साहित्य है। लोक जीवन के सुख-दुख, जीवन-मरण, संधि-विग्रह, हर्ष-विषाद, प्रिय-अप्रिय समस्त जीवन प्रसंगों, भाव धाराओं का चित्रण लोक साहित्य के विषय रहे हैं। राजस्थानी लोक कथाओं में लोक मेधा का सहज परिचय उपलब्ध है।" 5

इन लोक कथाओं के वर्ण्य विषय को किसी निश्चित परिधि में बांधना कठिन है। कभी ये शौर्य प्रधान, कभी नीति प्रधान, कभी हास्य प्रधान तो प्रेम प्रधान रूप धारण कर जन-मन को आलोकित करती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

मानव मन के सुंदरतम मनोभावों में से एक प्रेम है। प्रेम तत्त्व की भावना को काव्य शास्त्र के पंडितों ने श्रृंगार रस कहा है।

श्रृंगं मन्मथोद्‌भेदस्तदागमनहैतुकः ।
उत्तम प्रकृतिप्रायो रसः श्रृंगार इष्यते।। 6

राजस्थानी साहित्य में श्रृंगार अथवा प्रेम कथाओं, गाथाओं की दीर्घ सरणि विद्यमान रही है। राजस्थानी कवियों ने श्रृंगार का अनूठा वर्णन किया है। कृष्ण रुक्मणि री वेली, शिव पार्वती री वेली, रुक्मणि हरण और ढोला मारु रा दोहा तो इनमें विशेष प्रशस्ति प्राप्त हैं।

'सोरठियो दूहो भलो, भली मरवण की बात' 7

जैसी पंक्तियाँ इस भाव को व्यंजित करने के लिए पर्याप्त है।

विद्वत् समुदाय ने श्रृंगार रस के दो रूप माने हैं- संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार। मरुभूमि के प्रेमी युगलों के भाग्य में संयोग से अधिक वियोग लिखा गया।

प्रदेश की भौगोलिक संरचना तथा प्राकृतिक संसाधनों की विपन्नता के चलते राजस्थानवासी अपनी आजीविका और सैनिक सेवाओं के लिए देश के अन्य प्रांतों में वर्षोंवर्ष प्रवास करते थे। आवागमन के साधनों की कठिनाई के कारण अपने प्रिय जनों से मिलना-भेंटना दुर्लभ स्वप्न की तरह था। लंबे समय तक वे अपनी जन्मभूमि से दूर रहते थे। कितने ही व्यापारी और योद्‌धा सैनिक तो विवाह कर अपनी सेवाओं के लिए दूसरे प्रांतों में गमन कर जाते थे और अपने कर्तव्य में व्यस्त रहने के कारण कई वर्षों तक घर नहीं लौट पाते थे।

वे वहां अपना एकाकी जीवन बिताते और पीछे उनकी विरहणी प्रियतमाऐं झुर-झुरकर जीवन के दिन काटती थी। वे कागा, कुरजां (एक विदेशी पक्षी जो हर वर्ष समूह में राजस्थान प्रवास हेतु आते हैं, लोक मान्यता है कि वे अपने प्रिय से मिलने आते हैं।) और सूवटिया को अपने विरह का साथी बनाकर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

अपने प्रिय के लिए प्रेम पगा सन्देश उनके द्वारा भेजती थी। सुआ उसके धर्म का भाई था और कुरजां उसकी धर्म की बहन। वह उसे अपनी पीर सुनाते हुए उसके पंखों पर प्रिय के लिए उलाहने लिखती थीं -

थे कुरजां म्हारे गाँव की
लागो धर्म की भाण
कुरजां ऐ राण्यो, भंवर मिलाद्यो ऐ
संदेशो म्हारे, पिव ने पुगाद्यो ऐ

पांखां पै लिखूं थारै ओळमों
चाँचाँ पै सात, सलाम
संदेशो म्हारै, पिया ने पुगाद्यो ऐ
कुरजां ऐ म्हारो, भंवर मिलाद्यो ऐ

राजस्थानी प्रेम-पत्रों में ऐसे ही विरह व्यथित जनों के मार्मिक उद्गारों का हृदयस्पर्शी वर्णन है।

श्री शेखावत के निबंधों में इन राजस्थानी प्रेम पत्रों का ऐतिहासिक एवं सौंदर्यात्मक विवरण मिलता है। ये प्रेमपत्र विशुद्ध साहित्यिक हैं जिनमें प्रिया नाना प्रकार के प्रतीकों द्वारा अपने प्रियतम से मिलन की उत्कंठा करती है और किनारों को रंगीन बेल-बूटों से व कोनों को इत्र,फुलेल से सुगंधित करके लिखने बैठती है जिनमें ऊंची कल्पनाएं, शृंगारिक अभिव्यंजना, वर्णन कुशलता, भाषा का माधुर्य एवम् मृदुल भाव की धारा सी प्रवाहित होती अनुभव होती है। वे लिखती हैं -

सिध श्री साजन नगर पुर आनंद प्रमाण।
बसे जठे तन वल्लभा प्यारी जीवन प्राण।।

चंचल कीर नासा चपल बोलत इमरत बैण।
मिलयां विरह मिटावसी सांचा दिस रा सैण।।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

गंगा जळ री धार गत हिवड़ा ऊपर हार।
केहर भूखा गत कमर प्रीतम रे धण प्यार।।

प्यासी प्रीतम भूप री बणिया झटपट बैण।
परतख अगवा प्रेम रा बणिया झटपट नैण ।।

इस पत्र में प्रियतमा अपने प्रिय को संयोग काल की बातों का अनेक बहानों से स्मरण करवाती है। अपनी विरह दशा का वर्णन कर विदेश से लौट आने का निवेदन करती है। पति की ओर से पत्नी के पत्र का उत्तर है। पति अपनी विरही और मिलन उत्कंठित दशा का चित्रण करते हुए अपनी प्रगाढ प्रेम भावना व्यक्त करता है।

सिध श्री सुभ स्थान सो, जाणण श्रब गुण जाण।
पूगे कागद प्रेम रो प्यारी हाथ प्रमाण।।

मोर इंद्र रे मिलण री रहत प्राण बस राह।
मेरे प्यारी मिलण री आठ पहर उछाह।।

मयण सतावै रात दिन दीरघ सारो दिन्न।
अब तो प्यारी आप बिन, अंग न लागे अन्न।।

कोयल चाहत अम्ब रस, चकवा चाहत भोर।
ऐसे हम तुमकूं चहत, जैसे चंद चकोर।।
8

प्रेम और श्रृंगार की अभिव्यंजना डिंगल गीतों में भी प्राप्त होती है। डिंगल ऐतिहासिक वीर काव्य की भाषा रही है किन्तु इसमें श्रृंगार का भी वर्णन मिलता है। राजस्थान की सर्वाधिक प्रिय ऋतु वर्षा है। इस ऋतु में राजस्थानी जीवन मस्ती में नाच उठता है। अपने लहलहाते अनाज के खेतों पर मुग्ध होकर वह

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

गा उठता है। तब फिर राजस्थानी वीर कवि अपनी वाणी से उनका अभिनंदन किये बिना कैसे रह सकता है? वह भी अपनी वाणी द्वारा उसका स्वागत गान गाता है। पर इस लुभावनी सम्मोहक ऋतु में उसे विरहणियों की वेदना आंदोलित कर उठती है और वह उनकी वेदना पूर्ण भावनाओं को गाता है। ऐसे वीर गीत स्त्री और पुरुष दोनों के प्राप्त होते हैं। राजस्थानी डिंगल काव्य ने कई सरस और हृदयहारी गीत लिखे हैं जिनमें वह वियोग में कोमल भावनाओं की सफल अभिव्यक्ति करते हैं। यहां अपने प्रियतम की प्रतीक्षा है-

बधत मयूरां सोर दादुर घणा बोलिया,
उरे सुण कादर हिया डोलिया।
हरित परबत सरध सघन घन हो लिया,
छळी समर बिरह रा ब्रथा न छोलिया।।

झुझे बादळा जठे लगी बरसण झड़ी,
चहुँ दिसी चमकती बीज ऊँची चड़ी।
घणो सुख सैण मिल हुवे सुभ घड़ी,
खुसी व्है आगमण बाट जोऊँ खड़ी।।
9

राजस्थानी प्रेम कथाओं में वर्णित करुण स्थल श्रोता के हृदय को हिला देते हैं।
एको रसः करुण एव निमित्त भेदाद्..[10]
('करुण रस ही एकमात्र रस है, लेकिन निमित्त भेद से यह श्रृंगारादि रसों के रूप में अलग-अलग दिखता है')

जलाल गहाणी की प्रसिद्ध 'बात' में थट्टा भक्कर के बादशाह द्वारा जलाल की प्रेमिका बूबना के पास गहाणी की मृत्यु का छलपूर्वक झूठा संदेश भेजा जाता है। मृत्यु संवाद पाकर बूबना अचेत हो भूमि पर गिर पड़ती है और विलाप करती है। बात में वर्णन है - "गहाणी सुण पछाड़ खाय गिरी। छाती कूट बुरी

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

तरहे रोवणे-पीटणे लागी। सारे हाहाकार माच गयो। ऊभी थी सो ढह पड़ी। नेत्रा खवास नै सखी सहेल्यां रोवणे-पीटणे लागी।”10

दो प्रेमियों के वियोग में प्राणांत के रूप में कथा की नायिका श्रोताओं पर करुण प्रभाव उत्पन्न कर अपने प्रति पनपी हुई हेय भावना का परिशमन कर देती है। रूप और यौवन के अपराध से दंडित वह नायिका मरणोपरांत समाज की दुश्चर्चा बनने के स्थान पर आदर्श प्रेमिका का उदाहरण बनकर अमर हो जाती है।

वैसे अधिकांश प्रेम कथाएं पर-नायिकाओं से संबंधित है। इनमें समाज की मर्यादा का उल्लंघन और रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का तीव्र स्वर गूँजता है। समाज की उनके प्रति श्रद्धा नहीं होती है। परंतु प्रेमी के देहांत के समाचार के करुणलोचन होते ही ‘हणकारे ही हंस गो सणकारे ही सांस’ को चरितार्थ करने वाली नायिका के दुष्चक्र को भूल जाता है और उसके प्रेम की सराहना कर उठता है।” 11

यद्यपि यह कहा जाता है कि राजस्थानी साहित्य में वीर कृतियों का बाहुल्य है परंतु यह अर्ध सत्य है। यहां मात्र वीर रस का ही साहित्य नहीं है अपितु राजस्थानी कवियों की नव रसों में रचित पर्याप्त और श्रेष्ठ रचनाएं प्राप्त होती है। शांत रस में सहस्रों गीत, छप्पय और दोहे आज भी ग्रामों में वयोवृद्धों के मुख से सुने और संग्रहीत किए जा सकते हैं। करुण रस में तो हजारों मरसिए, गीत, दोहे रचे गए। हास्य रस में स्फुट छंद, मेसखरियां, बाणियां रासो, कुराड़ रासो, फुफी रासो, मांकण रासो और खीचड़ रासो तथा मदिरा, अफीम आदि नशों की भर्त्स्ना का पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है।12

श्री शेखावत लोकनृत्यों का सांस्कृतिक महत्त्व समझाते हुए इन सांस्कृतिक थातियों को संभालने का आग्रह भी करते हैं और अपने निबंधों में पाठक को लोकगीतों की परंपराओं से रूबरू करवाते हैं। वह लिखते हैं-
“लोकगीत नारी हृदय के स्वतः स्फूर्त उद्गार हैं। इनमें नारी हृदय का सनातन स्वर मुखरित होता है। समाज की मर्यादाओं, परिवारों की परंपराओं के घेरे में वह अपनी मनोकामना गीतों के माध्यम से ही समाज के समक्ष व्यक्त करती है। वह पति कुल की वृद्धि की वंश-वेलि है। सौंदर्य में इंद्र की अप्सरा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

उसके समक्ष नगण्य है। वह मृगलोचनी, गज गामिनी और पिक वयणी है। पुष्पों के भार तुलती है। पवन के झोंकों के स्पर्श से लुळ जाती है। सुकुमार तो इतनी है कि चावल का चतुर्थांश मात्र आहार करती है। फिर भी पचता नहीं है।”

यह सुकुमारता श्रुत्य है -

आफू रो बीज अफीम रो दाणो
सौ बर पीस असी बर छाण्यो
चौथाई री रांधी खीर, नव दिन रही पेट में पीर
आवो पंडत करो विचार मां सखियां में कुण सुकुमार?”
13

आज के इस बाजारवादी युग में जहां सब कुछ उत्पाद बन गया है, हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्य हमसे छूटते जा रहे हैं। आजीविका की चिंता ने गांव से दूर कर दिया है,बेरोजगारी ने परिवार का साथ छीन लिया और भविष्य की चिंता में उलझे बच्चों से उनका दादी-नानी से मिलने वाला स्नेह छूट गया है। मानव एक वस्तु बन गया है जहां उसका मूल्य उसकी उपयोगिता पर आधारित हो गया है। ऐसे समय में लोक जीवन का निस्स्वार्थ प्रेम, लोकगीतों की तान से तनाव को धत्ता बताता लोकमन, पाळियां बुझाकर जीवन की अनसुलझी उलझने सुलझाने वाला सरल हृदय, चींटी और चिड़िया को भी अपना परिवार मानने वाली सर्वहितकारी लोक संस्कृति सहज ही प्रासंगिक हो उठती है।

परिस्थितियों ने वर्तमान पीढ़ी को उसे इतना दूर ला खड़ा किया है कि अब लौट आना इतना आसान नहीं है किंतु परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय नितांत आवश्यक है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में-” मरे हुए बच्चे को गोद से चिपकाए रखने वाली बंदरिया’ हमारा आदर्श नहीं हो सकती। किंतु यह भी नहीं होना चाहिए कि हम नयी अनुसंधिता के नशे में चूर होकर अपना सर्वस्व खो दें।” [14]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

निष्कर्ष :- अपनी जड़ों से उखड़े हुए लोग,समाज और संस्कृति को धराशायी होने में समय नहीं लगता। सुखद अनुभूति का विषय है कि हमारे पास लोक, संस्कृति और परंपराओं के प्रति सजग करने वाला साहित्य और ऐसे ही प्रातिभ साहित्यकारों की दीर्घ परंपरा है जो अपने लेखन से समाज का सतत मार्गदर्शन करते रहे हैं।

श्री सौभाग्य सिंह शेखावत के निबंधों में साहित्य, संस्कृति और भाषा के इतिहास में नए नए तथ्य जोड़ने की विपुल सामग्री प्राप्त होती है। तमाच्छादित एवम् लुप्त ग्रंथों की खोज में श्री शेखावत ने अपने समय का अधिकांश व्यतीत किया। राजस्थानी काव्य की विभिन्न धाराओं के ऐतिहासिक पार्श्वों व चेतना तत्त्वों को स्पष्ट कर राजस्थानी साहित्य धारा की विकासशील गति को भी स्पष्ट किया। उन्होंने राजस्थानी साहित्य को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने में अहम भूमिका निभाई। शोध लेखन के साथ ही उन्होंने राजस्थानी भाषा की डिंगल शैली की अनेक महत्वपूर्ण पांडुलिपियों को संपादित कर उनका उद्धार किया।

यद्यपि लोक और साहित्य इतिहास के मानदंडों से नहीं चलते हैं तथापि उनकी अधारभूमि बिना ऐतिहासिक संघटनाओं के संभव नहीं। साहित्य में इसी प्रामाणिक आधारभूमि की खोज और उसके प्रकाशन में श्री शेखावत ने अपना जीवन समर्पित किया।

श्री शेखावत के शोध निबंधों की सराहना अनेक विद्वानों व इतिहासकारों ने की है। राजस्थानी शब्दकोश निर्माता पद्मश्री सीताराम लालस ने उनके निबंधों पर टिप्पणी करते हुए लिखा -"मुझे यह लिखते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि श्री शेखावत जैसे विद्वान से आज राजस्थानी भाषा और साहित्य की ऐसी कोई उलझन असाध्य नहीं है। वह जो बात कहते हैं,वह अकाट्य ही नहीं,सर्वमान्य होती है।"[15]

उल्लेखनीय है कि श्री शेखावत 'बिना प्रमाण एक शब्द नहीं' का सिद्धांत अपनाकर लिखते थे। शेखावत के निबंध जहाँ गहरी पैठ और नवीन ज्ञातव्यों से परिपूर्ण होते है, वहीं श्रम-प्रमादी लेखकों द्वारा प्रचारित भ्रांतियों के निराकरण में भी पूर्ण सक्षम होते है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

श्री शेखावत उस परंपरा के साहित्यकार हैं जिनके निबंधों से लोक संस्कृति को जानने,समझने और अध्ययन का अवसर मिलता है। उनकी लेखकीय मेधा और उनके लेखन के विषय में प्रसिद्ध विद्वान रावत सारस्वत के विचार यहां उद्धृत करने पर्याप्त होंगे- "उजले गद्दी तकियों के सहारे बैठकर रत्नों की परख करने वाले जौहरी और विकराल सागर के पेट में जाकर माणक-मोती निकाल लाने वाले गोताखोर, इन दोनों में जितना अंतर है,वो ही अंतर एक बड़े नामधारी विद्वान और सौभाग्य सिंह शेखावत में है। बीसवीं सदी की ताबड़ तोड़ भागदौड़ भरी जिंदगी में बहुत थोड़े लोग हैं जो अपने लक्ष्य के प्रति मन से समर्पित हैं...धोरों की धरती में गांव-गांव और घर-घर फिरकर साहित्य संग्रह का अतीव कठिन कार्य सौभाग्य जी ने किया है..।"

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. **डॉ सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी,पृ 455**
2. **त्रैमासिक पत्रिका जनपद वर्ष 1, अंक 1,पृ. 65**
3. **सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक, पृ. 68**
4. **विद्यानिवास मिश्र, साहित्य और इतिहास, कदम की फूली डाल, लोक भारती प्रकाशन, 2017, पृ. 85**
5. **सौभाग्य सिंह शेखावत, डिंगल गीतों में श्रृंगार रस, राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974, पृ. 187**
6. **सत्यव्रत सिंह, साहित्य दर्पण अनुवाद, चौखम्भा सुर भारती प्रकाशन, 1958, पृ. 230**
7. **लोक दूहा**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

8. सौभाग्य सिंह शेखावत, राजस्थानी साहित्य में प्रेम-पत्र,राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974,पृ. 179

9. सौभाग्य सिंह शेखावत,श्रृंगार रस के कुछ अप्रकाशित डिंगल गीत,राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974,पृ. 198

10. उत्तर रामचरितम्, 3.47

11. सौभाग्य सिंह शेखावत,राजस्थानी लोककथाएं,राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974,पृ. 261

12. सौभाग्य सिंह शेखावत, राजस्थानी लोककथाएं, राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974,पृ. 260

13. सौभाग्य सिंह शेखावत, लोकगीतों में संस्कारों का स्वर,राजस्थानी निबंध संग्रह, हिंदी साहित्य मंदिर प्रकाशन, 1974,पृ. 266

14. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नाखून क्यों बढ़ते हैं, कल्पलता, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, 1955, पृ. 5

15. राजस्थानी साहित्य के आगीवान, विनिबंध, रा. भा. सा. सं. अकादमी बीकानेर, 2014, पृ. 20